वर्तमान काल में बच्चों के सर्वांगीण विकास में संगीत शिक्षा का महत्व

बलजिन्द्र सैनी
असोसिएट प्रोफेसर, संगीत (वादन) भा0 उ0 सिं0 राजकीय महाविद्यालय मटक माजरी, इन्द्री (करनाल)

किसी भी देश, राज्य या समाज की प्रगति वहां की भावी पीढ़ी की शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक क्षमता एवं उनकी परवरिश व शिक्षा पर निर्भर करती है। बच्चों का पालन–पोषण सही ढंग से किया जाए एवं उन्हें उचित शिक्षा प्रदान की जाए तो उनका सर्वांगीण विकास होता है तथा एक विकासशील और उन्नत राष्ट्र का निमार्ण होता है। तभी कहा भी गया है कि बच्चे किसी भी राष्ट्र या समाज की मूल्यवान निधि होते हैं।

बच्चों के सर्वांगीण विकास में संगीत शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी मुशिकल विषय को संगीत द्वारा बच्चों को आसानी से समझाया जा सकता है। संगीत एक ऐसी विद्या है जो स्वतः किसी को भी अपनी तरफ आकर्षित कर सकती है।

मदन लाल व्यास के अनुसार ''संगीत एक शिक्षा पद्धति है, जिससे ज्ञान का अनुभव मिलता है, हमारी चेतना उद्दीप्त होती है।'' अर्थात संगीत स्वयं में ही एक शिक्षण की विधि है। यदि इस विधि से बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाए तो उनका सर्वांगीण विकास संभव है।

प्लेटो के अनुसार ''संगीत ऐसा माध्यम है, जो न केवल मानसिकता को प्रशिक्षित करता है वरन मनोभावों को भी प्रशिक्षित करके उन्हें विशुद्ध स्वरूप प्रदान करता है, जिससे व्यक्तिगत दुर्गुण दूर हो जाता है।[2]

किसी भी राष्ट्र की भावी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में संगीत शिक्षा निम्नलिखित प्रकार से योगदान प्रदान करती है –

1 बच्चों का स्वास्थ्य और संगीत

प्रत्येक सामान्य व असामान्य बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्तर पर अलग–2 गुण होते हैं, तथा इनकी इन क्षमताओं पर संगीत का प्रभाव बहुत लाभ प्रदायक है।

1.1 सामान्य बच्चों का स्वास्थ्य एवं संगीत –

1 बच्चे के जन्म से ही संगीत की भूमिका उनके जीवन से जुड़ जाती है। छोटे बच्चों को घर की बुजुर्ग औरतों व माँ द्वारा बचपन में लोरी गा कर सुलाया जाता है, ताकि बच्चा भरपूर नींद ले सके और बच्चा भी लोरी की मीठी धुन सुनकर सो जाता है। बच्चों के लिए गहरी नींद उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी होती है।

2 आजकल की शिक्षण प्रणाली से अधिकतर बच्चों में अध्ययन के प्रति नीरसता

उत्पन्न हो जाती है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता वे शारीरिक व मानसिक थकान का अनुभव करते हैं। ऐसे में यदि स्कूलों में बाल संगीत कार्यक्रमों का आयोजन समय–2 पर होता रहे तो बच्चे अपनी मानसिक व शारीरिक थकान भूल जाते हैं और उत्साहित होकर एसे कार्यक्रमों का आनन्द लेता है। इस प्रकार पढ़ाई से बच्चों के मन व शरीर पर पड़ने वाले अनावश्यक दबाव को कम करके पढ़न–पाठन की नीरसता को दूर किया जा सकता है।

3 संगीत से व्यायाम जैसे योग, एटोबिक्स व अन्य शारीरिक गतिविधियां जैसे खेल–कूद आदि को मनोरंजन बनाया जा सकता है।

4 संगीत स्वयं में एक व्यायाम है। गाने से कण्ठ, फेफड़ों व शिराओं का, वादन से उंगलियों व बाहों का तथा नृत्य से सम्पूर्ण शरीर का उचित व्यायाम होता है।

अतः हम कह सकते हैं कि संगीत का बच्चों के स्वास्थ्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है। संगीत की मदद से अनेक कार्य बच्चा बहुत ही सहजता से सीखता है, जो उसके विकास के लिए आवश्यक है।

1.2 शारीरिक व मानसिक रूप से असामान्य बच्चों के विकास में संगीत का महत्व :

1 शारीरिक व मानसिक रूप से असामान्य बच्चे अपने आप को समाज से अलग समझते हैं और उनमें हीन भावना जन्म ले लेती है। इस स्थिति में संगीत द्वारा इनमें आत्मविश्वास पैदा किया जा सकता है। जैसे– नेत्रहीन बच्चों को यदि गायन–वादन की शिक्षा दी जाए तो व सहजता से सीख लेंगें, क्योंकि ऐसे बच्चे स्पर्श व वाणी द्वारा सीख जाते हैं और इससे इनमें आत्मविश्वास व आत्मसंतुष्टि उत्पन्न होगी और वे हीन भावनाओं से मुक्त होंगे जो कि स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक हैं।

2 मूक–बधिर बच्चों का विकास भी संगीत द्वारा संभव है। इनको गाना या बजाना सीखाना तो निरर्थक है, परन्तु इन्हें नृत्य सिखाया जा सकता है। हाथ पर ताल देने तथा तबला वादक के चलन की मदद से मूक–बधिर बच्चों को लय का ज्ञान हो जाता है तथा ये सफलता पूर्वक नृत्य कर सकते हैं।

3 मंद बुद्धि बच्चों के विकास में भी संगीत का महत्व है। प्रो0 ब्रामरा फिटलज़ (1970) के अनुसार – ''संगीत द्वारा मन्द बुद्धि बच्चों के बौद्धिक स्तर में सुधार पाया गया। साथ में उनमें आत्मवि वास आत्मसंतुश्टि, आत्मसम्मान तथा उत्साह वर्धक भावनाएं जागृत हुई।

2 बच्चों में एकाग्रता का विकास :

प्रायः देखा जाता है कि बच्चों का मन चंचल होता है और किसी भी कार्य में एकाग्र होना इनके लिए कठिन होता है। लेकिन संगीत द्वारा यह संभव है क्योंकि बच्चों

को जब स्वर साधना करने की आदत होती है तो उन्की भावनाएं तथा मस्तिश्क भी केन्द्रित रहेगा और उनका मन एकाग्र होगा। स्वर साधना से एकाग्रचित होकर साथ में अन्य कार्यो का अभ्यास भी बच्चे एकाग्रता से करना सीख सकते हैं।

3 संगीत द्वारा बच्चों में अनुशासन का पालन करने की वृति का विकास :

किसी भी उद्देष्य की प्राप्ति हेतु लगन–निष्ठा के साथ–2 अनुशासन की आवश्यकता मुख्य रूप से होती है। संगीत अनुशासन एवं नियमबद्धता का उत्कृष्ट उदाहरण है। गायन–वादन में स्वर व लय बद्धता, नृत्य के विभिन्न चरणों की क्रमबद्धता आदि अनुशासनात्मक गुण बच्चों में संगीत शिक्षा द्वारा विकसित किया जा सकता है। बच्चों में संगीत सीखने के अतिरिक्त मंच प्रदर्शन भी अनुशासन सिखाता है। जैसे गायन प्रदर्शन में गायक के दांयी तरफ ताल वाद्य वादक व बायीं तरफ स्वर वाद्य संगत कार का विराजित होना। सांगीतिक मंच प्रदर्शन के समय श्रोताओं व दर्शकों का अनुशासन बद्ध होना अति आवश्यक है। डा0 श्रीपद रामचन्द्र नाईक के अनुसार ''श्रोताओं की नजरें, मन, कान खींच लेने की भाक्ति अनुशासन से भरी संगीत कला में होती है। इसलिए विद्यार्थियों में अनुशासन निर्माण करने के लिए जिन उपायों का प्रयोग किया जाएगा, उनमें यदि संगीत शिक्षा का भी प्रयोग किया जाए तो निशिचत रूप से वे सफल हो जाऐंगे जोकि देश कार्य के लिए अत्यावश्यक है।

4 संगीत द्वारा बच्चों में भावभिव्यक्ति की क्षमता का विकास :

संगीत को स्वर एवं लय के संयोग द्वारा भावभिव्यक्ति के साधन के रूप में व्याख्यित किया गया है। संगीत हृदयगत भावनाओं को प्रकट करने का माध्यम है। यदि बच्चे अत्याधिक प्रसन्न होते हैं तो वे ताली बजा कर या नाच कर अपनी भावना का प्रदर्शन करते हैं। संगीत में विभिन्न राग विभिन्न भावों को प्रदर्शित करते हैं। जैसे भक्ति के लिए भैरव, उल्लास के लिए बहार, श्रृगांर रस के लिए भैरवी, पीलू आदि।

V. Hornar के अनुसार :–

"Music education is concerned with musical literacy ear training, creating of music and the emotional and aesthetic growth of the pupils as well as the enjoyment of music."

5 एकता और सहानुभूति की भावना का विकास :

बच्चों को अनेक प्रकार के समूहगान, वृन्दवादन तथा समूह नृत्य आदि स्कूल में तथा अन्य स्तरों पर सिखाए जाने से एकता व परस्पर सहानुभूति की भावना विकसित होती है। देश भक्ति व सांस्कृतिक लोक गीत आदि सामूहिक रूप से सीखने से बच्चों में जाति, भाषा, धर्म आदि के भेदभाव कभी नहीं आते। इसी के साथ राष्ट्रीय एकता की भावना भी जागृत होती है। देश भक्ति के गीत सामूहिक रूप से गाने पर बच्चे स्वयं को राष्ट्र का अंग समझते हैं तथा उनमें दूसरों के प्रति प्रेम, भाईचारा व सहानुभूति की भावना

PURVA MIMAANSA

का विकास होता है।

6 संगीत द्वारा विभिन्न भाषाओं का ज्ञान :–

भारत देश में कई भाषाएं तथा बोलियां बोली जाती हैं। गीतों के द्वारा बच्चे सरलता से ये भाषाएं सीख लेते हैं। यदि बच्चों को विभिन्न भाषाओं के गीत सीखाये जायें और मातृ–भाषा व राष्ट्र भाषा का अर्थ भी बताया जाए तो वे सहज ही कुछ हद तक इन भाषाओं को सीख लेंगे।

7 संगीत द्वारा सांस्कृतिक चेतना :–

किसी भी स्थान का संगीत वहां की सांस्कृति का दर्पण होता है। किसी भी राज्य या देश के कलाकार अपने स्थान के संगीत की प्रस्तुति देते समय वहां के लोक संगीत, लोक वाद्य, वेश–भूषा आदि का प्रयोग करते हैं जो कि स्थान विशेष की संस्कृति से देखने व सुनने वालों को अवगत करवाता है। उदाहरणतः गिद्धा, भंगड़ा, पंजाब की, लावणी, महाराष्ट्र की संस्कृति से अवगत करवाते हैं।

8 संगीतिक प्रतिभा का विकास :

यदि बच्चों को भुरू से ही संगीत सिखाया जाए तो उनकी कला–प्रतिभा उभर कर सामने आती है। संगीत शिक्षा को आत्मसात करके जीवन में बच्चे इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं तथा अच्छे संगीत कलाकार बन सकते हैं।

9 संगीत द्वारा अन्य विषयों को सुरूचीपूर्ण एवं सरल बनानाः–

कई विश्य जैसे गणित, सामाजिक अध्ययन आदि बच्चों को रूचिकर नहीं लगते या कठिन लगते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को यदि संगीत के माध्यम से गा कर या बजाकर सिखाया जाए तो बच्चे आसानी से तथा रूचिपूर्ण ढंग से ये विषय सीख जाते हैं।

इस तरह ये पता लगता है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है। बच्चे औपचारिक व अनौपचारिक ढंग से संगीत शिक्षा प्राप्त कर जीवन में अनेक प्रकार का लाभ प्राप्त करते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में संगीत सशक्त माध्यमों में से एक है। बच्चें के पालन व शिक्षा को सहज व रोचक बनाने में संगीत अनेक प्रकार से सहायता प्रदान करता है। नवजात बच्चों की नींद व मन बहलाव में लोरी गान, बहुत पढ़ाई करने के बाद नई स्फूर्ति प्रदान करने में, व्यायाम को रोचक बनाने आदि अनेक कार्यों में संगीत सहायता करता है। इसके अतिरिक्त संगीत असामान्य बच्चों के विकास में भी महत्वपूर्ण है। ऐसे बच्चों की अनेक व्याधियों का निवारण संगीत द्वारा आसानी से हो जाता है।

संगीत शिक्षा द्वारा बच्चों में एकाग्रचितता, अनुशासन, भावभिव्यक्ति प्रकृति का ज्ञान, प्रेम, एकता, सहानुभूति व भाईचारे की भावना, अनेक भाषाओं व संस्कृति का ज्ञान, अन्य विषयों को आसानी से सीखने का लाभ प्राप्त होता है। यदि बच्चों की माताओं व अध्यापकों को संगीत का

PURVA MIMAANSA

ज्ञान हो तो वे बच्चों में संगीतिक प्रतिभा का विकास करके उनके सर्वांगीण विकास में सहायता कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः

1 संगीत पत्रिका, जनवरी 1989

2 संगीत कला विहार, अक्तूबर 1987

3 संगीत कला विहार, जनवरी 1986

4 संगीत शिक्षण परिचय, कालेकर व श्रीवास्तव

5 संगीत कला विहार, जनवरी 1966

6 Musical Education, V. Hornar

PURVA MIMAANSA